परमेश्वर की भक्ति में समर्पण

1 तिमुथियस 4:7 *पर अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग रह; और भक्ति के लिये अपना साधन कर*

अध्याय का ध्यान:

1) एक आत्मिक अगुवे का आत्मिक होना बहुत ज़रूरी है । व्यक्तिगत पाप आपको नीचे ला सकता है।
2) आपको अपनी कमज़ोरियों के बारे में साफ - साफ पता होना चाहिए।
3) अपने आपको मज़बूत बनाये रखने का रहस्य है कि परमेश्वर के प्रति भक्ति को बढ़ाना।
4) आपको अपना रिश्ता एक ऐसे व्यक्ति के साथ रखना है जो आपको बहुत अच्छी तरह से जानता हो और जो आपको सुधरने में सहायता करे।

इफिसियों 2:1-3 *और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।* 2 *जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है।* 3 *इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।*

- हम सब एक बीते हुए पाप के जीवन से आये हैं! हमे अपने कमजोरियों और संघर्षों के विषय में पता होना चाहिए !

Q: आपकी सबसे बड़ी परीक्षाए क्या है ? जब आप आत्मिकता में कमजोर होते हो तो किस प्रकार के पाप बार -बार उभरते हैं?

1 तिमुथियस 4:7-8 *पर अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग रह; और भक्ति के लिये अपना साधन कर।* 8 *क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आने वाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है।*

Q: धार्मिकता क्या है?

A: इसका मतलब है परमेश्वर के जैसा बनना , क्रिस्त जैसा या आत्मिक बनना!

इफिसियों 5:1-2 *इसलिये प्रिय, बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश बनो।* 2 *और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।*

1. धार्मिकता अशुद्ध और बुढ़ियों की सी कहानियों से नहीं आती है

नीतिवचन 13:20 *बुद्धिमानों की संगति कर, तब तू भी बुद्धिमान हो जाएगा, परन्तु मूर्खों का साथी नाश हो जाएगा।*

नीतिवचन 27:17 *जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।*
केवल सहयोग हमें नहीं बदल सकता , हमें गहरा रिश्ता बनाना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 8:1-3 *अब मूरतों के साम्हने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में हम जानते हैं, कि हम सब को ज्ञान है: ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है।* 2 *यदि कोई समझे, कि मैं कुछ जानता हूं, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता।* 3 *परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो उसे परमेश्वर पहिचानता है।*

सभोपदेशक 1:18 *क्योंकि बहुत बुद्धि के साथ बहुत खेद भी होता है, और जो अपना ज्ञान बढ़ाता है वह अपना दुःख भी बढ़ाता है! केवल ज्ञान भक्ति को नहीं ला सकता।*

2. धार्मिकता प्रशिक्षण से आती है (1 तिमुथियस 4:7)

Q: प्रशिक्षण शब्द से आपके मन में क्या विचार आते है?

- निरंतर प्रशिक्षण एक कठिन या अक्सर दर्द भरा कार्य है , जिससे हमें फायदा होता है।

मूसा	-	तम्बू की सभा / उपवास करना
यहोशू	-	हर रोज़ ध्यान करना
दाऊद	-	भजन गाना
एलिय्याह	-	अकेले
दानिय्येल	-	तीन बार प्रार्थना करना
पतरस और पौलुस	-	प्रार्थना
येशु	-	उपवास, अकेले, प्रार्थना

3. शारीरिक प्रशिक्षण से फायदा होता है

Q: इससे आप क्या समझते हो ?

4. आत्मिक प्रशिक्षण का इस ज़िन्दगी में और आने वाले जीवन दोनों में लाभ होगा।

1 तिमुथियस 6:11-12 *पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का पीछा कर। 12 विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिये तू बुलाया, गया, और बहुत गवाहों के साम्हने अच्छा अंगीकार किया था। इस जीवन में हमें बड़े फायदे होंगे और आने वाले जीवन में अनंत जीवन प्राप्त होगा।*

1 कुरिन्थियों 9:25-27 *और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं। 26 इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उस की नाईं नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। 27 परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं॥*

- हम सभी को प्रशिक्षण से गुज़रना चाहिए।

2 तिमुथियस 3:16-17 *हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। 17 ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए.*

- धार्मिक बन्ने का प्रशिक्षण लो।

इब्रानियों 12:11 *और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं; पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।*

- अनुशासन से धार्मिकता की उपज होती है।

विचार विमर्श के लिए सवाल:

1) अपने और अपने मार्ग दर्शक के रिश्ते को देखो। क्या यह आपको आत्मिकता में बढ़ने में सहायता करती है ?
2) क्या आपने अपनी शक्ति और कमज़ोरियों को पहचान लिया है ?
3) क्या आपके पास आत्मिकता में बढ़ने के लिए लिखित योजना है ?

घर के लिए काम क्या आपको अपने सबसे बड़ी परीक्षाओं और कमज़ोरियों के बारे में पता है ? और क्या आपने इस विषय में किसी को बताया, जो आपकी सहायता करे और उसका लेखा ले ? ऐसे कौनसे क्षेत्र है जिसमे आप कमज़ोर है, उनको लिखे और उसके लिए निरंतर प्रार्थना करे। ऐसे लोगों का पता करो जो आपको इन क्षेत्रों में बढ़ने में सहायता करे और आप उनके साथ बढ़िया संगती करे।